देह के सब बंधन तोड़
एक के संग सर्व सम्बन्ध जोड़
मन बुद्धि को देना नया मोड़
करनी ज्ञान योग की दौड़
नयी दुनिया की करनी रचना
निश्चय और नशे में रहना
स्वर्ग के अब गेट खोलने
अलबेला उसमे नहीं होना
दृढ़ता की प्रतिज्ञा करना
सम्पूर्णता का प्रसादी देना
मैपन की यज्ञ में आहुति डालना
मोह को त्याग निर्बन्धन बनना
पिंजरे की मैना नही बनना
जीवमुक्त हो स्वर्ग की मैना बनना
ऐसी परिवर्तन की प्रसादी हो तैयार
साकार से खुशबू वतन तक पहुंचे
अनुभूति और प्राप्ति का प्रासाद
हर आत्मा के दिल तक पहुंचे
जीते जी मरजीवा बनना
ऐसा गुप्त पुरुषार्थ है करना

ॐ शांति